शिवनारायण गौर

छन्नू सेठ की चक्की

छन्नूलाल जी छोटी कद-काठी के आदमी थे। धोती-कमीज़ पहनते थे। उनके सिर पर तेल से भीगी सफेद टोपी हमेशा लगी रहती थी। म.प्र. के एक छोटे-से गाँव में रहते थे छन्नूलाल जी। आसपास के कई गाँवों के लोग उन्हें जानते थे। प्रेम से लोग उन्हें छन्नूसेठ कहते थे। वे क्या करते थे, इसके बारे में क्या कहूँ? वो इसलिए क्योंकि उन्होंने क्या-क्या नहीं किया.... चक्की चलाई, ठेकेदारी की, कुएँ की रिंग बनाई और एक बार तो उन्होंने होटल भी खोली। होटल में तरह-तरह की मिठाइयाँ बनाते और आते-जाते लोगों को टेस्ट कराते रहते। उनकी इस आदत की वजह से ये तो होना ही था – होटल जब तक चली घाटे में चली। और आखिरकार बन्द हो गई।

छन्नू सेठ नए-नए काम करते रहते। नए-नए तरीकों से। बिल्कुल उनके अपने तरीकों से। वे आज हमारे बीच नहीं हैं। पर उनके हज़ार-हज़ार किस्से गाँव-गाँव में सुने और सुनाए जाते हैं। इन्हीं किस्सों में से एक है उनकी चक्की का किस्सा। वे अपनी चक्की को चलाने के लिए तेल से चलने वाला इतना बड़ा इंजन लाए कि उसके पहिए को घुमाने के लिए 5-6 बलशाली लोगों की ज़रूरत होती थी। पहले इंजन को गर्म करने के लिए लकड़ी-कण्डे (उपले) से आग सुलगाई जाती। इंजन गर्म होने के बाद चालू होता। इंजन का चालू होना एक जश्न जैसा होता था। उसे चालू होते देखने वालों की भीड़ लग जाती। चक्की पर गेहूँ पिसाने के लिए गाँव-गाँव से लोग आते थे। दिनभर चक्की चलती रहती। उधर चक्की चलती रहती इधर छन्नू सेठ की गप्पें। सेठ जी न तो चक्की चलाने का ख्याल रखते न पिसाने वाले से पैसों का हिसाब रखते। जो भी ग्राहक आता अपना अनाज पीसता और पास ही रखे डिब्बे में पैसा डालकर चला जाता। वे किसी से नहीं पूछते कि कितना अनाज पीसा और कितना पैसा डाला। सब कुछ भरोसे पर चलते रहता। कोई दिन अगर बिना गप्प लगाए बीत जाता तो उन्हें बहुत बुरा लगता। वे बेचैन हो जाते।

इमली के एक पेड़ के नीचे खटिया बिछाकर वे लेटे रहते। इस ठिए पर आने-जाने वालों के लिए चाय और बीड़ी की व्यवस्था बनी रहती। दिनभर लोगों का आना-जाना लगा रहता। चर्चाओं के दौर चलते। इन चर्चाओं में कानून की बातें बहुत ज़्यादा हुआ करती थीं। वे हर समस्या का कानूनी हल बताते। ऐसी चर्चाओं में एक बात वे अकसर कहते थे – तुम चिन्ता मत करो अपन कोर्ट से स्टे ले आएँगे।

सेठ जी खुद को एक बड़ा मैकेनिक भी मानते थे। मोटरसाइकिल से लेकर हवाई जहाज़ तक सुधारने का दम भरते थे। होटल की संसी, चिमटा और सरौता इन तीनों औज़ारों के बल पर वे कुछ भी सुधार सकते थे। हाँ, ज़्यादा ही ज़रूरत पड़ी तो कुल्हाड़ी की भी मदद ले ली जाती। ऐसे थे छन्नूलाल जी। चकमक